VAAGDHARA

वातें
वाग्धारा नी

अक्टूबर, 2023

अंक 41

VAAGDHARA

प्रिय सम्माननीय साथियों, मेरे आदिवासी कृषक भाईयों, बहनों व प्यारे बच्चों, पिछले लम्बे समय से हमारी चिंता का विषय वर्षा का ना आना था लेकिन आज जब मैं आप सबसे रूबरू होने के लिए लिखने बैठा तो बाहर मूसलाधार बारिश हो रही है बारिश एक प्राकृतिक देन है जिसे लेकर अनियमितता का दौर बढ़ता ही जा रहा है जो कि चिंताएं और चर्चा दोनों को ही बढ़ा देना वाला होता है । पिछले लम्बे समय से वर्षा को लेकर जो अनियमितता देखी जा रही है निश्चित ही यह बड़ी चिंता का विषय बनता जा रहा है देखने में यह आ रहा है कि पिछले कई वर्षों से वर्षा का यह पैटर्न ही बनता जा रहा है इस बार मानसून के आरम्भ से पहले ही वर्षा की शुरुआत हो गयी फिर बीच के समय में एक लम्बे समय तक बारिश आई ही नहीं और अब अचानक 2 दिन में इतना बरस गयी कि पूरे सीजन की भरपाई कर दी ये ऐसी घटनाएँ हैं जो प्राकृतिक रूप से शुभ संकेत नहीं देती हैं ।
आगामी माह अर्थात अक्टूबर माह हम सभी किसान भाइयों के लिए विशेष रूप से महत्व लेकर आने वाला है । क्योंकि यही वह महीना होता है जिसमे पिछले कई महीनों की मेहनत के परिणामस्वरूप सभी किसान भाई बहिन खेतों में से बहुमूल्य और कीमती खरीफ फसल को अपने काटने की तैयारी कर रहे होते हैं । और अगली फसल यानि रबी की बुवाई को लेकर योजना और तैयारी के कार्यों में जुटे हुए होते हैं चूँकि खरीफ और रबी दोनों फसलों के अंतर्संबंध के आधार पर यह सब घटित होता है ।
आगामी महीना हमारे लिए इस रूप में भी महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इस माह में खरीफ फसल तो हमारे हाथों में होती ही है साथ ही साथ पूरा महीना त्यौहार और उत्सव से सराबोर होता है इतना ही नहीं स्वराज का सबसे बड़ा उत्सव हम 2 अक्टूबर को यानि गाँधी जयन्ती के रूप में मनाते हैं ग्राम सभा में भागीदारी निभाना अपने लोगों के साथ मिलकर बैठना, चर्चा करना सुख दुःख को एक दूसरे के साथ मिलकर बाँटना और चहुँओर खुशियाँ ही खुशियाँ परम्पराएँ बनाने वालों ने भी कितना ख़ूबसूरती के साथ चीजों को एक साथ पिरोया है । जैसा कि सब जानते ही हैं वाग्धारा संवाद की प्रक्रिया में विश्वास करता है संवाद स्थापित करने के माध्यम अलग-अलग हो सकते हैं संवाद की इस प्रक्रिया में यह पत्रिका एक बड़ी भूमिका निभाती है । अलग-अलग स्तर पर बने हुए संगठन और गाँवों में निरंतर होने वाली बैठकें ऐसे विभिन्न मंच हैं जहाँ पर संवाद स्थापित करने में पत्रिका एक सहायक के रूप में सबके साथ होती है । संवाद की प्रक्रिया और विचार-विमर्श की प्रक्रिया के दौरान लगातार हम दै नंदिनी जीवन में आने वाली चुनौतियाँ और उनके लिए प्रभावी समाधान की खोज करते रहते हैं साथ ही चर्चाओं के आधार पर निकलकर आये समाधान के लिए लगातार समुदाय, सरकार और बाज़ार से आग्रह भी करते रहते हैं। और यह प्रक्रिया सतत और नियमित रूप से चलती रहती है । इसी क्रम में गत वर्ष वाग्धारा द्वारा "स्वराज सन्देश संवाद पदयात्रा" का आयोजन किया गया था । छोटे-छोटे समूहों में निरंतर किये जाने वाली चर्चाओं में चहुँओर से यह गूँज सुनाई दे रही है कि वर्षा की अनियमितता के कई कारण हैं जैसे कि- वातावरण बदल रहा है, पर्यावरण में बदलाव दिखाई दे रहे हैं, परिवेश और जीवन शैली में बदलाव आ रहे हैं आदि इत्यादि । अलग-अलग मंच पर अलग-अलग समूहों में जब समान मुद्दों पर वार्ताओं का आयोजन दिखाई पड़ने लगा तो एक स्वस्थ विचार-विमर्श की श्रृंखला को आगे बढ़ाने और बनाये रखने आवश्यकता महसूस की गयी । वैचारिक चिन्तन करते हुए निष्कर्ष के क्रम में इस वर्ष 20-22 सितम्बर 23 को समागम के आयोजन की योजना बनी है ।
एक बड़े स्तर पर यह योजना इसलिए भी बन सकी क्योंकि इंसानों के आचरण में आ रहे बदलाव के प्रभाव का असर संस्कृति अर्थात आदिवासी संस्कृति, कृषि की संस्कृति जैसे महत्वपूर्ण चीजों पर प्राकृतिक रूप से दिखाई देने लगते हैं | इंसानों ने प्राकृतिक आदिवासी संस्कृति को अपने अनुसार ढालने के प्रयास किये हैं हम मिलकर ऐसा क्या कर सकते हैं जिससे विनाश की कगार पर पहुँचकर खंड विखंड होने वाली प्रकृति को पुनः ऊर्जा के संचार के साथ बनाया और सहेजा जा सके, नुकसानों की भरपाई कर हो रहे प्राकृतिक विनाश को रोका जा सके ताकि प्रकृति खुशी के साथ हमारी हमजोली बन जाए ।
सोचने की आवश्यकता इसलिए भी महससू की गयी दिन ब दिन बाज़ार पर हमारी निर्भरता बढ़ती जा रही है इसे ऐसे समझा जा सकता है-अब से पहले हमारे गाँवों जो डीजल आता था या प्लास्टिक की चीजों का उपयोग किया जाता था वो कम था । लेकिन धीरे-धीरे इन चीजों ने हमारे जीवन में अपनी अनिवार्यता को बढ़ा दिया और पहले की तुलना में अब ये चीजें हम अधिक मात्रा में काम में लेने लगे हैं ।
एक उदाहरण यह भी देखा जा सकता है कि पहले जब भी सामूहिक भोज का आयोजन किया जाता था और हम सब जीमण में जाते थे तो प्राकृतिक रूप से उपलब्ध होने वाले पत्तल और दोने, पलाश के खाखरे के पत्ते बनाकर हम अपने साथ लेकर जाते थे । लेकिन वर्तमान में हम प्लास्टिक की प्लेट जो कि प्राकृतिक नहीं है, मिट्टी में जाकर खाद नहीं बनाता है, मिट्टी की गुणवत्ता को ख़राब कर देता है, मवेशी के खा लेने से बीमार हो जाते हैं और इन प्लास्टिक की चीजों को बाज़ार से खरीदने के लिए हम पैसा भी देते हैं इस तरह से प्राकृतिक और आर्थिक दोनों रूप में नुकसान उठाते हैं ।
पर्यावरण का तीसरा नुकसान हुआ है हमारी सामाजिक समरसता के रूप में अर्थात पर्यावरण का तीसरा नुकसान है और हमारी सामाजिक समरसता इतनी कम हो गई कि हम जहां पर भोजन के लिए जाते हैं वहां पर बिना जुड़ाव के जाने लग गए मेहमान बन गए तो उसे हमारे सामाजिक नुकसान होने लगा आर्थिक, पर्यावरण सामाजिक और संस्कृति को बोलने का इतने बड़े नुकसान हमारे लिए एक छोटे से उदाहरण हमे देखने को मिल सकते है | आप हर एक उदाहरण हमारे जीवन के हर अंग, हर गतिविधि को चयन करके, देख करके और आप महसूस कर सकते हैं किस प्रकार से हमने नुकसान किया उसके लिए हमारा सरकारों के साथ, स्वयं के साथ, समाज के साथ और बाजार के साथ, क्या संबंध होना चाहिए उसे पुनः देखना होगा इसी संवाद को देखने के लिए यह दो दिवसीय हमारा कार्यक्रम वह जिसमें हम अपने आप को पुनः सशक्त करें, हम मजबूत करें, हमारे विचारों को मजबूत करें, मैंने खेती से शुरुआत की थी, वाग्धारा के माध्यम से संवाद की स्थापना की शुरुआत हुई आज वर्षों से इसी संवाद को मजबूत करने के लिए हम प्रयासरत हैं हमेशा चिंता होती है कि हमारा बदलाव कितना परिवर्तन ला पाएगा, परंतु उसी के साथ विश्वास होता है कि यह परिवर्तन, यह बदलाव बड़ा बदलाव लायेगा हम पुनः हमारी संस्कृति की सुरक्षा कर सकेंगे हम हमारे आदिवासी जीवन शैली को बचा सकेंगे और इस समाज को पर्यावरणीय, आर्थिक, सामाजिक और असमानता से मुक्त कर सकेंगे आप सबसे स्वराज के आग्रह के साथ "जय स्वराज"

धन्यवाद

जय- हिंद, जय- स्वराज !!!

आपका अपना

जयेश जोशी

वागड़ का महाकुंभ

कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम 2023

VAAGDHARA

प्रस्तावना

आदिवासी जीवनशैली महात्मा गाँधी के स्वराज की अवधारणा का एक श्रेष्ठ उदाहरण है। धरती पर आदिवासी समुदाय ही एक ऐसा वर्ग है जिसने स्वराज आधारित जीवन पद्धति या जीवन दर्शन का अनुसरण तो किया ही है साथ ही आदिकाल से अपनी परंपरा, अपनी संस्कृति और प्राकृतिक संसाधनों को न सिर्फ संचित करके रखा है बल्कि इनका संरक्षण और संवर्धन भी किया है। ऐसे समुदायों के कई उदाहरण विश्व के कई कोनों में देखने को मिलते हैं परंतु बढ़ते उपभोक्तावाद और आधुनिकता के कारण ये प्रायः लुप्त होते जा रहे हैं। विकास के नाम पर शहरीकरण, मशीनीकरण दैत्याकार रूप में फैलते जा रहे हैं, तो दूसरी तरफ गांवों की रौनक शहरों की ओर कूच करती जा रही है। गांवों से युवा-शक्ति का पलायन रोकना आज एक बड़ी चुनौती है। हम जानते हैं कि आदिवासियों का जीवन श्रम, सामूहिकता, संवेदनशीलता, सादगी, समानता, सहजता, सरलता और सच्चाई पर आधारित है, इसलिए इनके जीवन में किसी के प्रति दुर्भाव नहीं है और किसी से स्पर्धा नहीं है, और भरपूर सांस्कृतिक सौन्दर्य और सृजनात्मकता है ।
आदिवासी समुदाय जिस तरह से जीवन-यापन करने के लिए कृषि, पशुपालन एवं परम्परागत ज्ञान का इस्तेमाल करता है, उससे प्रकृति का शोषण कम से कम होता है । प्रकृति में सृजन का मूल है बीज, पोषण देने वाली जननी है मिट्टी, जीवनदायिनी शक्ति के रूप में है जल, भोजन एवं आवास के रूप में ज़मीन और प्रकृति में जैव विविधता एवं संतुलन बनाने के लिए जानवर को देखा जाता है। प्राणि मात्र के अस्तित्व के लिए ये पाँच घटकों–जल, जंगल, जमीन, जानवर और बीज का होना अति आवश्यक है और इनका रक्षण, संरक्षण और संवर्धन करके ही इन सभी घटकों का स्वराज हासिल किया जा सकता है।
स्वराज की अवधारणा को यदि मानव जीवन में सम्मिलित किया जाए तो विभिन्न चुनौतियों जैसे की प्रकृति का असंतुलन, बेरोजगारी, भुखमरी, अंधविश्वास, असमानताएं (अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष, जाति, लिंग, धर्म, रंग, भाषा, प्रान्त इत्यादि) के कारण खड़े हुए तनाव,संघर्ष, मतभेद,अशांति का समाधान हो सकता है । इस क्रम में यह आवश्यक है कि स्वराज को लेकर स्थानीय स्तर पर की जा रही व्यक्तिगत एवं सामुदायिक पहल, जिससे मध्य भारत के आदिवासी एवं गैर आदिवासी समाज के बीच एक ऐसा आधार निर्मित किया जाये जिससे स्वराज के विभिन्न घटकों के माध्यम से गाँधी के स्वराज को मूल्यों को अपना सके और आने वाली पीढ़ीयों को स्वराज प्रदान कर सके ।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम

प्रतिवर्ष की भांति दक्षिणी राजस्थान एवं उसकी सीमाओं से जुड़ते हुए मध्य प्रदेश एवं गुजरात के आदिवासी जिलों के समुदाय द्वारा कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम का आयोजन बांसवाडा में किया जाता रहा हैं। इस समागम में देश भर से विशेषज्ञ, विचारक, प्रमुख रूप से आदिवासी क्षेत्र के हज़ारों लघु व सीमांत कृषक एवं स्वराजी भागीदारी करते हैं विभिन्न विषय मुख्यतः जल, जंगल, ज़मीन, पशु, बीज, खाद्य व पोषण स्वराज, बाल अधिकार इत्यादि पर गहन चर्चा करते हैं एवं समुदाय के प्रमुख सम्बंधित मुद्दे एवं उनसे जुड़ी हुई मांगो को नीति निर्माताओं एवं अन्य हितधारकों तक पहुंचाते हैं।
विगत वर्ष यह समागम एक नए स्वरूप में **"स्वराज संदेश संवाद पदयात्रा"** के रूप में आयोजित किया गया था। यह यात्रा बांसवाड़ा से आचार्य श्री विनोबा भावे की जयंती दिनांक 11 सितम्बर 2022 से प्रारम्भ होकर महात्मा गाँधी की जयंती दिनांक 01 अक्टूबर 2022 को जयपुर पहुंची। दिनांक 01 अक्टूबर 2022 को दुर्गापुरा, जयपुर स्थित स्वतंत्रता सेनानी सर्वोदयी नेता श्री गोकुल भाई भट्ट की समाधि स्थल **'राजस्थान समग्र सेवा संघ'** में कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम का आयोजन किया गया। यात्रा के अंतिम चरण में दिनांक 02 अक्तूबर को आदिवासी समुदाय की ओर से तैयार किया गया स्वराज आग्रह पत्र माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत को एवं दिनांक 03 अक्टूबर को माननीय राज्यपाल को प्रस्तुत किया गया। माननीय मुख्यमंत्री एवं माननीय राज्यपाल द्वारा स्वराज संदेश संवाद पद यात्रा के प्रयास की प्रशंसा की गयी एवं आदिवासी समुदाय के आग्रहों पर उचित कार्यवाही का आश्वासन भी दिया गया।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम -2023

इस वर्ष यह समागम पुनः एक नए स्वरुप में आयोजित किया जाना प्रस्तावित है। जिसके अंतर्गत दक्षिणी राजस्थान, मध्य प्रदेश एवं गुजरात कार्यक्षेत्र के विभिन्न संगठनों से चयनित सदस्य 'जन मंच सदस्य' निर्णायक की भूमिका में लगभग आठ हज़ार (8,000) से अधिक आदिवासी समुदाय सदस्यों के साथ अपने क्षेत्र की प्रथाएं, प्रक्रियाएं एवं मुद्दों पर गहन विचार करेंगे एवं आग्रह पत्र के रूप में अपने मुद्दों के स्थानीय स्तर पर संभव हो सकने वाले समाधानों को तैयार कर नीति-निर्माताओं के समक्ष प्रस्तुत करेंगे।

उद्देश्य

- आदिवासी क्षेत्र की स्वराज विचारधारा पर आधारित खाद्य एवं बीज स्वराज, जल एवं वन स्वराज, मृदा एवं पशुधन स्वराज, बाल स्वास्थ्य एवं पोषण स्वराज, शिक्षा एवं बाल विकास स्वराज, संस्कृति एवं वैचारिक स्वराज के अंतर्गत की जा रही उत्तम प्रथाओं एवं व्यवहार (प्रैक्टिसेज) पर मंघन कर सम्बंधित चुनौतियाँ एवं स्थानीय स्तर पर संभव समाधानों का समेकन कर राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न हितधारकों तक पहुंचाना ।
- मुद्दों एवं संभावित मुद्दों की पहचान एवं उन्हें विभिन्न हितधारकों तक पहुँचाने की प्रक्रिया में समुदाय के सदस्यों में 'जन मंच' मॉडल से स्वामित्व भावना उत्पन्न करना ।
- देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्र में समानरुपी स्वराज समागम के आयोजन हेतु विभिन्न राज्यों के हितधारकों के साथ जुड़ाव स्थापित करना एवं उनके सहयोग से अन्य राज्यों में एवं राष्ट्रीय स्तर पर कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम की रूपरेखा तैयार करना।

संवाद की कार्य प्रणाली

कार्यक्रम की रणनीति का ढांचा मुख्यतः "संरक्षित करना – पहुँच बनाना–बढ़ावा देना" (PROTECT – ACCESS – PROMOTE) के सिद्धांतों पर केन्द्रित होगा ।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम 2023 का आयोजन बांसवाडा में आदिवासी समुदाय के नेतृत्व में आयोजित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम निम्नलिखित चार मुख्य विषयों पर आधारित होगा :-

(1) जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में पोषण सुरक्षा हेतु बीज, खाद्य एवं वानस्पतिक विविधता लिए एकीकृत कार्य

- जनजातिय क्षेत्र में खाद्य एवं कृषि प्रणाली में विविधता की स्थिति।
- जलवायु परिवर्तन की अभिव्यक्ति और क्षेत्र में भोजन एवं कृषि प्रणाली पर उसका प्रभाव।
- खाद्य प्रणाली पर सकारात्मक प्रभाव के लिए जलवायु परिवर्तन के भीतर अनुकूलन और शमन के सन्दर्भ में संभावित हस्तक्षेप, जैसे समुदाय प्रबंधित बीज प्रणाली, मूल्य श्रृंखला दृष्टिकोण, पारिवारिक खेती दृष्टिकोण, खाद्य वन, सतत् एकीकृत कृषि प्रणाली, पोषण संवेदी कृषि प्रणाली, हांगडी खेती इत्यादि।

(2) जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में सतत्ता के लिए ऊर्जा, जल और मृदा प्रबंधन की दक्षता

- गुणवत्ता एवं मात्रा के सन्दर्भ में ऊर्जा, जल एवं मृदा उपयोग दक्षता की वर्तमान स्थिति
- क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन की अभिव्यक्ति और संसाधन उपयोग दक्षता पर उसका प्रभाव।
- टिकाऊ पारिस्थितिकी तंत्र के लिए जल और ऊर्जा बजट-आधारित कार्यों जैसे उन्नत कार्य।

(3) जलवायु परिवर्तन कार्यों और संप्रभुता के लिए युवाओं का नेतृत्व निर्माण

- आदिवासी समुदाय में युवाओं की स्थिति
- जलवायु परिवर्तन की अभिव्यक्ति और जनजातिय जीवन एवं आजीविका पर उसका प्रभाव।
- युवाओं का पारंपरिक जीवन एवं व्यवस्था से अलगाव के कारण।
- जलवायु परिवर्तन कार्यों और आदिवासी संप्रभुता को फिर से जीवंत करने के लिए युवा नेतृत्व का विकास।

(4) जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में आदिवासी संस्कृति और चक्रीय जीवन शैली का पुनर्जीवीकरण

- क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन की अभिव्यक्ति और आदिवासी समुदाय की टिकाऊ आजीविका पर उसका प्रभाव (जलवायु जोखिम मान चित्रण)
- जलवायु परिवर्तन शमन एवं जलवायु परिवर्तन प्रेरित आपदा जोखिम (CCIDR) के विरुद्ध लचीला पन लाने हेतु संभावित हस्तक्षेप।
- पारंपरिक जीवन शैली के उदाहरण एवं जलवायु परिवर्तन प्रेरित आपदा जोखिम के साथ अनुकूलता-कृषि वानिकी, प्राकृतिक खेती, खाद्य वन, भूमि क्षमता के आधार पर भूमि उपयोग, प्रकृति आधारित समाधान इत्यादि।

जन मंच

- यह एक ऐसा मंच है जो आमजन को सामूहिक रूप से भारतीय समाज की चुनौतियों के बारे में जानने, विचार-विमर्श करने एवं उनका समाधान करने के लिए अवसर प्रदान करता है।
- समुदाय के सदस्यों से बना यह मंच उन नीतियों पर निर्णय लेती है जो उन्हें उपयुक्त एवं आवश्यक है।
- जन मंच के सदस्य विभिन्न विशेषज्ञों के माध्यम से मुद्दों के बारे में समझते हैं। वे अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं और मंच के सदस्य मिलकर उनके सुझावों पर विचार –विमर्श करते है ।
- मंच के सदस्य विभिन्न विकल्पों और दृष्टिकोण को सुनने के बाद एक सुविचारित निर्णय पर आते हैं।

समागम से पूर्व स्थानीय स्तर पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन द्वारा प्रत्येक विषय हेतु क्षेत्र के सभी 26 कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठनो के कुल सदस्यों में से एक–एक सदस्य का चयन 'जन मंच सदस्य' के रूप में किया जाना प्रस्तावित है। इस अनुसार कुल 520 सदस्यों में से 104 (26x4) सदस्यों का 'जन मंच' के रूप में चयन किया जाएगा, जो कि क्षेत्र की विषय वार विभिन्न पद्धतियों, प्रथाओं एवं मुद्दों पर प्रारंभिक चर्चा करेंगे। अन्य 416 सदस्य निरीक्षक अथवा आब्जर्वर का कार्य कर करेंगे एवं आग्रह पत्र को तैयार करने एवं बड़े समूह के साथ चर्चा करने में सहयोग करेंगे।

प्रथम दिवस (20 सितम्बर 2023)

प्रस्तावित तीन दिवसीय समागम के प्रथम दिवस पर चयनित 104 जन मंच सदस्यों का आमुखीकरण किया जाकर सभी सदस्यों के साथ 'जन मंच' की तैयारी का आयोजन कर चारों विषयों पर गहन चर्चा की जानी प्रस्तावित है। प्रथम दिवस की समाप्ति सांस्कृतिक संध्या से किया जाना प्रस्तावित है।

द्वितीय दिवस (21 सितम्बर 2023)

द्वितीय दिवस पर सभी चारों विषयों पर जन मंच सदस्यों के साथ औपचारिक चर्चा की जानी प्रस्तावित है। इन 104 सदस्यों के साथ ही कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठनों के अतिरिक्त 416 सदस्य

श्रोता एवं आब्जर्वर के रूप में उपस्थित रहेंगे एवं जन मंच की चिंतन एवं चर्चा की प्रक्रिया से आग्रह पत्र (चार्टर) का प्रथम प्रारूप तैयार करेंगे।
सायंकालीन प्रत्येक 26 संगठनों के क्षेत्र से आमंत्रित 5000 से अधिक ग्राम स्वराज समूह एवं सक्षम समूह सदस्यों के बड़े समूह के साथ गहन चर्चा करने के उपरांत आग्रह पत्र को अंतिम रूप दिया जायेगा।
द्वितीय दिवस की संध्या में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन प्रस्तावित है।

तृतीय दिवस (22 सितम्बर 2023)

समागम में पधारे हुए अतिथियों, नीति-निर्माताओं, राजनेताओं, विशेषज्ञों, मीडिया एवं अन्य हितधारकों के समक्ष प्रत्येक विषय पर सम्बंधित जन मंच सदस्यों द्वारा आग्रह पत्र के बिंदुओं का प्रस्तुतीकरण किया जाना प्रस्तावित है।

कार्यक्रम का स्थान

कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम -2023 का आयोजन बांसवाडा जिला स्थित त्रिपुरा सुंदरी मंदिर प्रांगण के सामने दिनांक 20 सितम्बर से 22 सितम्बर 2023 तक किया जाना प्रस्तावित है ।

समुदाय के साथ चर्चा की प्रक्रिया

उपरोक्त विभिन्न मुद्दों पर समुदाय के प्रयास, प्रयासों से सफलता के उदाहरण और समुदाय सुझाव के संकलन को साझा करने एवं उनके प्रयासों से सीखने हेतु विचारों का आदान प्रदान किया जायेगा।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम के प्रमुख हितधारक अपेक्षित परिणाम

- मुद्दों का चयन एवं संभावित समाधानों को विभिन्न हित धारकों तक पहुँचाने में समुदाय का स्वामित्व।
- कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन एवं मंच से समर्पित सदस्यों का जुड़ाव बनेगा।
- युवाओं का वृहद् स्तर पर स्थानीय मुद्दों से जुड़ाव बढ़ेगा।
- राज्य स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर तक नीतिगत मुद्दों की गहराई से समझ विकसित होगी एवं एक प्रभावी कार्य-योजना तैयार होगी ।
- देश के अन्य राज्यों में समागम के आयोजन हेतु एक रूप-रेखा बन सकेगी।
- अन्य राज्यों से आमंत्रित सिविल सोसाइटी के सदस्य समागम का आयोजन एवं कार्यप्रणाली देख सकेंगे, जिससे उन्हें उनके क्षेत्र में समागम आयोजित करने में सुगमता होगी।

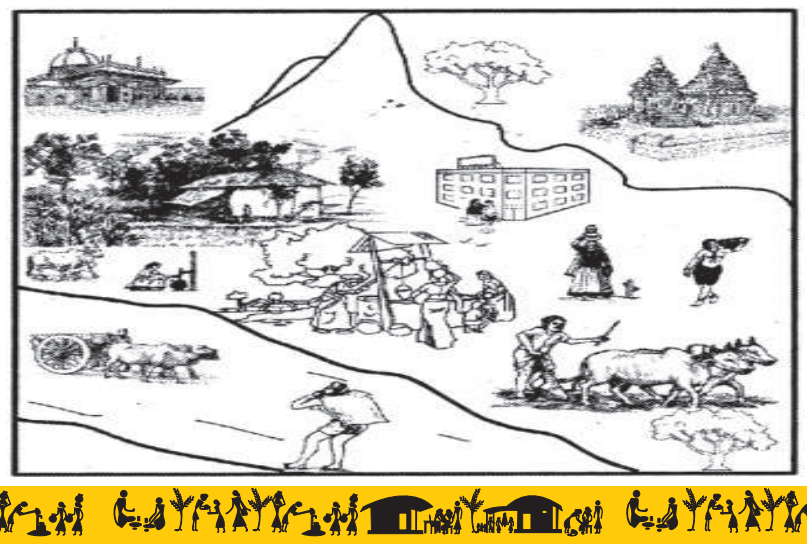

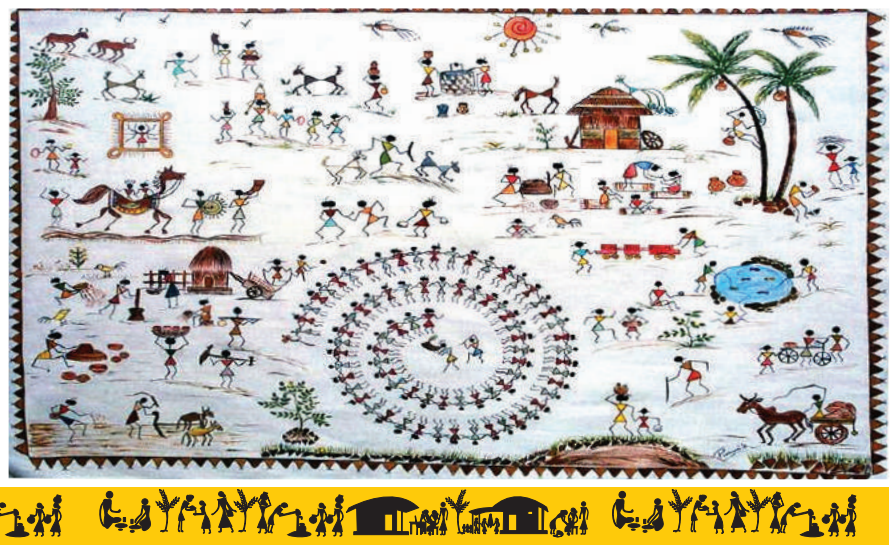

बीज, पौध एवं जल स्वराज

श्री अन्न (मोटे अनाज) और इनके लाभ

हमारे देश की पहल पर दुनिया भर में मिलेट्स वर्ष मनाया जा रहा है । हमारे वागड़ क्षेत्र के किसान मोटे अनाज जैसे रागी, कुरी आदि का उत्पादन पीढ़ियों से करते आये है । हमारे बुजुर्गो का परंपरागत ज्ञान ही है जिन्होंने मोटे अनाज के महत्त्व और गुणों को पहचान कर उसे परंपरागत खेती का हिस्सा बनाया । आज हमारे बुजुर्गो के ज्ञान को दुनिया समझ रही है । संयुक्त राष्ट्र संघ ने मार्च 2021 में अपने 75वें सत्र में वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष घोषित किया है। इस लेख के माध्यम से आज हम "मोटे अनाज के पोषण, स्वास्थ्य, लाभ और बदलती जलवायु परिस्थितियों में खेती के लिए उनकी उपयुक्तता" के बारे में जानेंगे ।

गेहूँ, सोयाबीन जैसे आमतौर पर उगाए जाने वाली फसलो की तुलना में मोटे अनाज को अक्सर उच्च पोषण सामाग्री के कारण "पोष्टिक अनाज या श्री अन्न" कहा जाता है । यह मां और बच्चो सहित मानव और पशु स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं । मोटे अनाज में माल (रागी), कांगनी (कांग), कुरी, चीना आदि शामिल हैं । मोटे अनाज कम लागत वाली व कम उपजाऊ मृदा पर भी आसानी से उग सकते हैं । ये फसल कई रोगों और कीटों के लिए प्रतिरोधी है | प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में जीवित रह सकते हैं । मोटे अनाज की आनुवंशिक विविधता और विशिष्ट व्यावसायिक गुणों को अब सभी जानने लगे है । मोटे अनाज के कई उत्पाद बाजार में गेंहू, चावल आदि की तुलना में ऊँचे दामो पर बेचे जा रहे है । हमारे आदिवासी किसान भाई और बहने मोटे अनाज को घर में उपयोग करने के बाद अतिरिक्त उत्पादन से अलग -अलग उत्पाद को बाजार में बेच कर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते है ।

वाग्धारा संस्था के द्वारा मोटे अनाज के महत्त्व को कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन के नेतृत्व में राष्ट्रीय पोषण माह के अवसर पर समुदाय तक पहुँचाया जा रहा है । इस वर्ष संगठन के नेतृत्व में की गई पहल पर 20,000 किसानो द्वारा मोटे अनाज की खेती की जा रही है । जिसके सार्थक परिणाम सामने आ रहे है । शीघ्र ही मोटे अनाज की फसल पक कर तैयार हो जायेगी ।

एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 1965 से 1970 तक मोटा अनाज हमारे कुल भोज्य पदार्थो का 20 प्रतिशत था जो अब घटकर केवल 6 प्रतिशत रह गया है । हरित क्रांति से गेहूँ एवं चावल की फसलों को बढ़ावा मिलता गया व सीमांत किसान पारंपरिक फसलों से दूर होता गया । इससे मोटे अनाज के क्षेत्र में 56 प्रतिशत कमी आई है ।

विभिन्न प्रकार के मोटे अनाज या श्री अन्न :

1. **बाजराः** बाजरा एक ऐसी फसल है, जिसे सूखा प्रभावित क्षेत्रों या उच्च तापमान वाले क्षेत्रों में भी आसानी से उपजाया जा सकता है। इसका उपयोग हमारे यंहा परंपरागत रूप से होता आया है| सर्दियों के मौसम में बाजरा से बनी रोटी, लड्डू, खिचड़ी को बहुत पसंद किया जाता है । इसमें ऊर्जा अधिक होती है, इसलिए खाने वाले लोग अधिक शक्तिशाली ऊर्जावान बने रहते हैं। बाजरा में पाए जाने वाले तमाम पोषक तत्वों में विटामिन खनिज और कई कार्बनिक यौगिक, लोहा, पोटेशियम, जस्ता, कैल्शियम, विटामिन 'सी' और मैग्नीशियम हैं। इसके अलावा बाजरा प्रोटीन और फाइबर से भी भरपूर होता है। इसलिए बाजरा अच्छे स्वास्थ्य के लिए एक बेहतर खाद्य विकल्प माना जाता है। इसके सेवन से शरीर की हड्डिया मजबूत होती है । इससे कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम होता है और कैंसर की आशंका कम होती है ।
2. **ज्वारः** इसकी कई प्रजातियों की खेती की जाती है । इनमें से अधिकतर पशु चारे के लिए उगाई जाती है । ज्वार की एक प्रजाति खाने के काम आती है । यह डायबिटीज को कम करने और वजन घटाने में भी कारगर है । यह पोषक तत्वों से भरपूर है। फाइबर होने के कारण इसके सेवन से कई प्रकार के स्वास्थ्य लाभ मिलते है ।
3. **रागी :** इसको माल के नाम से भी जाना जाता है । यह 6 से 8 घंटे भिगोने के बाद शिशु, छोटे बच्चो के लिए एक बहुत ही पोष्टिक आहार है । रागी कई प्रकार के खनिज और फायबर से भरपूर होती है ।
4. **चीनाः** चीना रेशो से भरपूर मोटा अनाज है, जिससे भरपूर मात्रा में उर्जा मिलती है । यह महिलाओ, बच्चो में होने वाली खून की कमी को दूर करने में सहायक होता है । चीना में विटामिन बी, लोह तत्व जैसे पोष्टिक तत्व मिले होते है साथ ही इसमें गेंहू के समान ग्लूटेन नहीं होता है, जिसके कारण व्यक्ति को मधुमेह रोगियों के लिए फायदेमंद होता है ।
5. **कोदो :** कोदो के बीज औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं । यह कफ और पित्त से होने वाली बीमारियों में सहायक है। यह मोटा अनाज खून को प्राकृतिक रूप से साफ़ करने का कार्य करता है। यह मधुमेह, हृदय संबंधी रोगों, कैंसर और पेट संबंधी समस्याओं से छुटकारा दिलाने में मदद करता है । इसे लीवर व किडनी के लिए अच्छा अनाज बताया जाता है ।

इस प्रकार के कई गुण मोटे अनाज में होते है, इसलिए हम सभी को मोटे अनाज की खेती को बढ़ावा देना चाहिए । गाँवो में मोटे अनाज के गुणों के साथ ही प्रतिकूल मौसम में भी उपज प्रदान करने की विशेषता का अधिक से अधिक लोगो को प्रचारित करना चाहिए । समुदाय स्तर पर मोटे अनाज के विभिन्न उत्पाद बनाकर तथा आकर्षक रूप से पेक कर उन्हें विक्रय करने का व्यवसाय भी शुरू किया जा सकता है ।

सरकार से आग्रह :-

सरकार को भी मोटे अनाज के उत्पादन को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा स्थानीय किसानो से मोटे अनाज की खरीदी बिक्री सुनिश्चित की जानी चाहिए । आंगनवाडी, विद्यालय स्तर पर भी मोटे अनाज से बने भोज्य पदार्थो को मध्यान्ह भोजन योजना में सम्मिलित किया जाना चाहिए । सरकार राशन की दुकान के माध्यम से भी ग्रामीणों तथा शहरी नागरिको को मोटे अनाज वितरित करना चाहिए. यह प्रयास समुदाय को पर्यावरण की दृष्टि व स्वास्थ्य की दृष्टि से और सामाजिक तथा आर्थिक रूप से सक्षम बनाने में सहायता करेगा ।

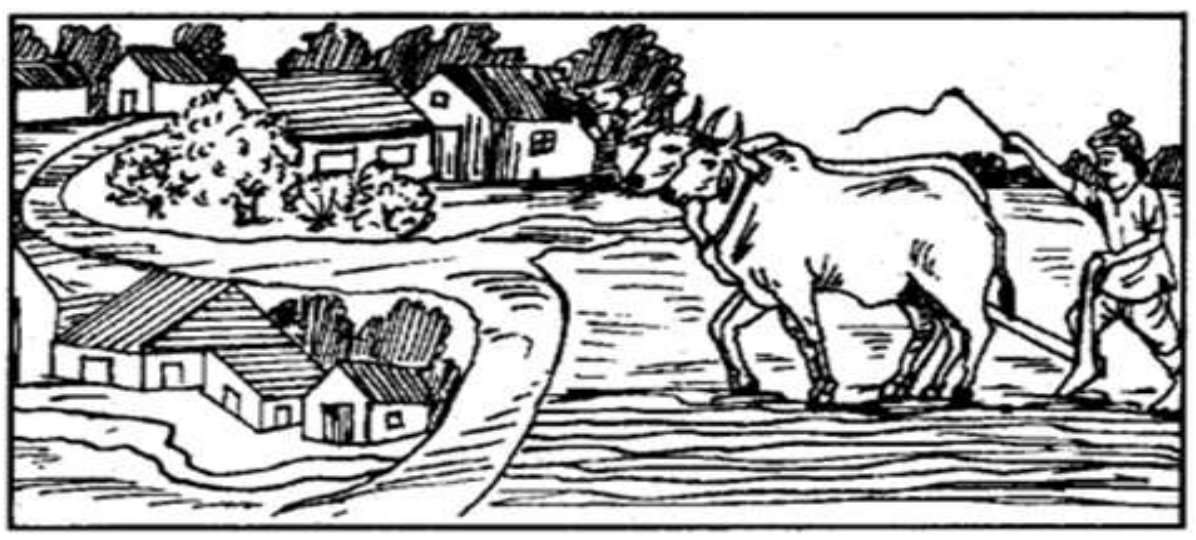

गाँव के विकास में युवा शक्ति का योगदान

वर्तमान में देश की कुल जनसंख्या का 40% हिस्सा युवा वर्ग का है ऊर्जा, उत्साह से भरपूर नवयुवक जब ग्राम स्तर पर विकास की प्रक्रियाओं से जुड़कर अपनी भागीदारी निभाएंगे तो राज्य और राष्ट्र स्तर पर भी सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगत हो सकेंगे । वर्तमान में युवा पूरी तरह से तकनीकी ज्ञान से जुड़ा हुआ है और बहुत सारी ऐसी चीजों की जानकारी, ज्ञान और समझ के साथ हैं जिनके सहयोग से यदि देश, समाज और समुदाय के विकास को सुनिश्चित किये जाने के बारे में सोचा जाए तो विकास के अवसरों का लाभ उठाया जा सकता है ।

महत्वपूर्ण घटक

पंचायत स्तर पर कार्यान्वित खेलकूद समिति का गठन-

खेलों में जन सहभागिता तय करने और बढ़ाने के उद्देश्य से यह आवश्यक हो जाता है कि ग्रामीण स्तर पर युवाओं की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित किया जाए। और निरंतर रूप से खेल कूद गतिविधियों का आयोजन करवाया जाए ताकि गाँव और पंचायत स्तर से प्रतिभावान युवा निकलकर जिला, राज्य और राष्ट्र स्तर पर अपनी योग्यता को दर्ज करवा सके ।

ग्रामीण स्वच्छता और स्वयं सेवक के रूप में युवा शक्ति का योगदान-

गाँवों में खुली नाली व्यवस्था गंदे पानी को इधर-उधर फैलाकर और जमा हो जाने से गंदगी और गंदगी से फैलने वाली बीमारियों को जन्म देने के अवसर बनाती है । युवा शक्ति के योगदान से चारो ओर फ़ैली गंदगी और गंदे पानी कि निकासी करने में सहयोग करते हुए गांव में स्वच्छता को बढ़ावा दिया जा सकता है ।

विद्यालयों और आंगनवाड़ी सेवाओं की पहुँच तक का सुगम और बाधा रहित रास्ते से सफर संभव-

गाँवों में खेत, खलिहान और कच्चे रास्तों व पगडंडियों के कारण विद्यालयों तक पहुँच पाना मुश्किल हो जाता है। बहुत बार ऐसा भी देखा गया है कि जिन राहों से गुज़र कर बालक -बालिकाएं विद्यालय में आया जाया करते हैं वे खेतों में से होकर गुजरते हैं और फसलों का समय ऐसा दौर होता है जबकि कि ऊँची-ऊँची फसलें उन रास्तों को रोक देती हैं , ऐसे में बालिकाओं में असुरक्षा की भावना उनको विद्यालय जाने से रोक देती हैं ऐसी परिस्थिति से बचाव में गाँव के युवा मिलकर विद्यालयों और आंगनवाड़ी को गाँव से जोड़ने के लिए सड़क निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें तो गाँव के बच्चे, महिलाओं को शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधा से जुड़ाव सुनिश्चित करने में एक बड़ा सहयोग प्राप्त किया जा सकता है ।

गाँव के सार्वजनिक स्थलों को बाल केन्द्रित बनाने के रूप में बड़ी भूमिका-

गाँव में अक्सर देखा जाता है कि सार्वजनिक स्थलों पर खुले आम झुण्ड में बैठकर लोग अपना कीमती समय ऐसे ही बैठकर बर्बाद कर रहे होते हैं । खाली बैठे हुए इन लोगों से संकोच करते गाँव के बच्चे और बालिकाएं वहां पर आने में या वहां से गुजरने में संकोच करते हैं और सहम जाते हैं और इसी वजह से वे लोग खुलकर खेल कूद और घूमना फिरना नहीं कर पाते क्योंकि वे वहां आने में असुरक्षित महसूस करते हैं । ऐसे में गाँव की युवा शक्ति मिलकर इन सार्वजनिक स्थलों को बाल केन्द्रित बनाने में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। ऐसे सार्वजनिक स्थल जहाँ पर बिजली की व्यवस्था नहीं है ऐसे स्थानों पर बिजली होना सुनिश्चित करवाएं ताकि रात्रि के समय बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों को निकलने में असुविधा और असुरक्षा की भावना का अहसास ना हो ।

गाँवों में बच्चों के लिए सुरक्षा और संरक्षण की दृष्टि से स्वस्थ माहौल के निर्माण में आवश्यक भागीदारी-

जिन गांवों में पलायन की स्थिति बनती है और परिवारों में पुरुष सदस्य जीविकोपार्जन संसाधन जुटाने के क्रम में गाँव से बाहर चले जाते हैं ऐसे परिवारों में पीछे महिलाएं और बच्चों को अकेले ही रहकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करनी होती है । गाँव के युवा सदस्यों के कुछ ऐसे समूह बने हुए हो सकते हैं जो कि आपात कालीन स्थितियों या आवश्यकतानुसार ऐसे परिवारों को सहयोग प्रदान कर सकें । इन युवा समूहों के सहयोग से परिवारों को सहयोग मिल सकता है और इनके जीवन के संघर्ष में सहायता मिलने से आसान बनाया जा सकता है ।

राष्ट्रीय पर्व और उत्सव दिवस को ग्राम पंचायत स्तर पर मनाने की ज़िम्मेदारी लिए जाने की आवश्यकता-

देश में राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाये जाने वाले त्यौहार स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस और गांधी जयन्ती से सभी परिचित हैं । ये पर्व धूमधाम से ग्राम स्तर पर मनाए जा सकें इस हेतु गाँव की युवा शक्ति अपनी भूमिका निभा सकती है विभिन्न तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन करना, सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी कर गाँव और समुदाय के सभी लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए इन उत्सवों को मनाए जाने से सामूहिकता के बड़े सिरे को देखा जा सकता है ।

गाँव स्तर पर किशोर-किशोरियों के स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने में बड़ी भूमिका-

किशोर और किशोरियाँ एक ऐसा समूह होता है जिन्हें पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य की दृष्टि से सर्वाधिक देख भाल की आवश्यकता होती है। किशोरावस्था में सही देखभाल और दिशा ना मिलने से ये दिशाहीन होकर अपनी राह से भटक भी सकते हैं। अतः गाँव के युवाओं की एक बड़ी ज़िम्मेदारी मानी जा सकती है जबकि किशोरावस्था जैसे संवेदनशील दौर में किशोरों के दोस्त और सहयोगी बनकर उनके स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने और दिशाहीन होने से बचा सकें ।

युवा क्लब/संगठन के माध्यम से गाँव में बुजुर्गों के सानिध्य में चर्चाओं और सांस्कृतिक संध्या का आयोजन करवाना-

गाँव स्तर पर कुछ युवा क्लब और संगठन बनाकर कार्य किये जाने की आवश्यकता है । ये संगठन और क्लब कुछ इस तरह से कार्य कर सकते हैं कि लोकगीत संगीत के कार्यक्रम, नुक्कड़ नाटक, लोक नृत्य का आयोजन, लोक साहित्य, कवि सम्मेलन, कठपुतली के आयोजन पर आधारित सांस्कृतिक संध्याओं का आयोजन करना, और सांस्कृतिक संध्या के माध्यम से गाँव के बुजुर्गों, महिलाओं, बच्चों को एक साझे मंच पर लाना और पारम्परिक प्रथाओं, लोक गीतों और कहानियों के माध्यम से आपसी वार्तालाप का आयोजन करवाना आदि हो सकते हैं । इन आयोजन का आधार सामाजिक रूप से फ़ैली कुरीतियाँ जैसे- दहेज़ प्रथा, मृत्यु भोज, जेंडर आधारित भेदभाव, स्त्री शिक्षा आदि-इत्यादि । इन सांस्कृतिक संध्याओं के आयोजन का उद्देश्य साम्प्रदायिक सामंजस्य, सद्भावना और शांति का प्रसार करना होता है ताकि गाँव स्तर पर एक स्वस्थ माहौल और एक दूसरे के प्रति मान सम्मान की भावना बनी रह सके ।

समुदाय की भूमिका-

- समुदाय के लोगों को अपने समुदाय से इस प्रकार के नव युवक और नव युवतियों को समूह बनाये जाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ।
- समुदाय के बुजुर्ग लोगों को इस तरह की शुरुआत अपने-अपने परिवार से आरम्भ किये जाने की आवश्यकता है अपने परिवार के युवा सदस्यों को प्रेरित करें ताकि वे इस तरह के समूह बनाकर सांस्कृतिक संध्या, आपसी चर्चाओं का आयोजन, खेलकूद की गतिविधियों का आयोजन और गाँव के विकास से जुड़े कार्यों में बढ़-चढ़ कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सके ।
- समुदाय के लोग युवा समूहों में भागीदारी निभाने के लिए किसी भी तरह का जेंडर आधारित भेदभाव ना करें और इस तरह की सोच को विकसित करें कि युवा बालक का अगर समूह बनकर कार्य कर रहा है तो युवितयों का समूह भी गाँव के विकास कार्यों से जुड़े और भावी पीढ़ी और बुजुर्गों के बीच में एक मजबूत कड़ी के रूप में उभरकर अपनी भूमिका को सुनिश्चित करें ।
- समुदाय के लोग सकारात्मकता के साथ इन समूहों के साथ अपनी भागीदारी को सुनिश्चित करें और इनके द्वारा आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों, गाँव के विकास के लिए निर्वाह किये जाने वाली गतिविधियों में खुलकर भागीदारी निभाएं ।

सरकार की भूमिका-

- गाँव स्तर पर तैयार युवा समूहों को ब्लॉक, तहसील, जिले और राज्य स्तर पर आगे बढ़ाएं ताकि ये युवा वर्ग विकास के कार्यों में खुलकर अपनी भागीदारी निभा सकें ।
- ग्राम स्तर पर आयोजित होने वाली खेलकूद और सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं और कार्यक्रमों को सरकार खुलकर सहयोग करे ताकि संस्कृति को बढ़ावा मिल सके और युवा शक्ति परम्पराओं को बनाये और बचाए रखने में अपनी भागीदारी और कर्तव्यों को समझ सके ।
- ग्राम स्तर पर विकास के बेहतर कार्यों को किये जाने वाले समूहों को सम्मानित किये जाने के प्रावधान से युवा समूहों को गौरव की प्राप्ति होगी और आगे की प्रक्रियाओं में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने के क्रम में प्रेरित हो सकेंगे ।

परिवार की भूमिका-

- परिवार के स्तर पर माता-पिता की भूमिका होती है कि अपने बच्चों की रूचि की पहचान करें और उसे उसी क्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करें ।
- बच्चों के साथ रोक टोक ना करें अगर बच्चे खेल कूद, नृत्य संगीत में आगे बढना चाहता है तो उसे उसी तरह की गतिविधियों में ग्राम स्तर पर उपलब्ध मंचों पर भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित करें ।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई – हिरण

सच्चा स्वराज : कुशलगढ़, बाजना, थांदला एव सज्जनगढ़ के कुल 416 गांवों में ग्राम स्वराज समूह की बैठकों का आयोजन किया गया| ग्राम स्वराज समूह के सदस्य जागरूक हुए है और अपने गांव की समस्याओं के समाधान के लिए आवाज उठाते है और उसके समाधान के लिए हो सके वहा तक पूरा प्रयास करते है | यही संगठन बड़े रूप में हमारे कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठनों के माध्यम से जो अपनी गांव की बड़ी समस्या को मासिक बैठको में रखते है | स्वराज संगठन के द्वारा सभी समस्याओं का आकलन कर विशेष समस्याओं के लिए ज्ञापन तैयार किया जाता है और संबंधित विभाग को अवगत कराते है और उसका जिम्मेदारी के साथ फोलोअप भी लिया जाता है| कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन बाजना, भगतपुरा, टीमेडा, छोटी सरवा, पोटलिया, कसारवाड़ी, तांबेसरा, भिलकुआ एव थांदला के द्वारा इस माह सभी पंचायतो में 15 अगस्त की ग्राम सभा मे दिए गए प्रस्ताव का फोलोअप लेकर विशेष कार्य को सेक्शन करवा कर जल्दी कार्य शुरू करवाने की जिम्मेदारी ली गई, कसारवाडी संगठन के द्वारा जंगली जानवरों के द्वारा फसल खराब करने को लेकर सचिव, सरपंच एव पटवारी को ज्ञापन के माध्यम से अवगत कराया गया| हमारे संगठन अब अपने हक की लड़ाई सीखते हुए अपने हको को लेने के लिए अग्रसर है जो काफी सुखदायी है |

सच्चा बचपन

बाल समूह की कुल 416 मे से 348 बैठकों का आयोजन किया गया | बच्चों को परम्परागत खेल सतोलिया - गीली डंडा - लुका छुपी आदि का आयोजन कर गतिविधियों के माध्यम से कम खर्च में मनोरंजन के गुर सिखाए गए साथ ही इस माह विशेष रूप से बच्चों ड्राप आउट बच्चों की सूची तैयार करने का निर्णय लिया गया साथ ही जो बच्चे पालनहार - सामाजिक सुरक्षा से वंचित है उनका चयन कर जोड़ने का निर्णय लिया गया है | बैठको में बाल अधिकारों की समझ विकसित की गई ताकि बच्चे अपने अधिकारों को समझ सके और निडर होकर खुले वातावरण में रह सके किसी भी प्रकार की शारिरिक और मानसिक समस्याओं का सामना कर सके बच्चों को खेल- खेल के माध्यम से परिवार स्तर पर किस प्रकार सामंजस्य बिठा कर अपनी समस्या को रखने के बारे में सिखाया गया जो सराहनीय एव सुखदायी है जो आने वाले भविष्य को तैयार करने के लिए लाभदायक साबित होंगा |

सच्ची खेती

सच्ची खेती कार्यक्रम के तहत कुल 405 गांव में अनुमानित फ़सल उत्पादन, बीज विविधता पर अभ्यास कराया गया व विस्तार पूर्वक चर्चा की गई ताकि आने वाले माह में जो फसल कटाई होने वाली है उसको सहज कर रख सके जो हमें परम्परागत रूप से प्राप्त हुई है क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों में अधिक उत्पादन पैदावार के लिए समुदाय द्वारा रासायनिक खाद का उपयोग ज्यादा करने लगे थे सक्षम समूह के माध्यम से जागरूक कर बंद करवाया गया है अब समुदाय जैविक खेती करने लगा है सक्षम समूह में संस्था द्वारा वर्मी कम्पोस्ट उपलब्ध करवाए गए है। वर्मी खाद तैयार कर उपयोग करने लगे है साथ ही प्रत्येक परिवार में पांच प्रकार के फलदार पौधे है , पोषण बगियाँ व देशी सब्जियों का उपयोग करने लगे है जिससे बीमारियों का खतरा कम हुआ है। बैठको के माध्यम से जैविक कृषि सम्बन्धी क्रियाकलाप के बारे में किसानों को जाग्रत किया गया। तथा जैविक पद्धति अपना कर इससे होने वाले फायदे के बारे में बताया गया। ताकी अधिक से अधिक किसान जैविक कृषि में रुचि रखते है उन्हें सभी जैविक गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है जो सराहनीय कार्य है |

मोटा अनाज

सावा, कुरी, कांग, माल / बावटा, चिना आदि के बारे हम नही जानते थे | वाग्धारा संस्था की बैठकों में भाग लिया तब इन सब बीजों के बारे में जाना और इस बार की खरीफ की फसल में अपने खेतों में लगाया भी है जो कि सितम्बर अंत में पक जायेगा कुछ जगह पूरी तरह पक भी गया है किन्तु वर्षा की वजह से फसल निकलना थोडा मुश्किल हो रहा है| आज के युवा इन फसलों के बारे में नहीं जानते है क्योंकि आज की पीढ़ी अपने बुजुर्गो के पास बैठती ही नही है हमें समय ख़राब करना लगता था और मोबाइल पर रील्स, vidoe देखते रहते है | जब एक दिन हमारे गांव में वाग्धारा संस्था से आये कार्यकर्ता ने हमें इन बीजों के बारे में बताया तो हमारे बुजुर्गो ने भी हमें बताया की पहले हम ये खाने के काम में लेते थे जिससे ताकत और बीमारियाँ कोसो दूर रहा करती थी किन्तु अब ऐसा नहीं है सब जगह शंकर बीज ही रह गया है |

सावा, कुरी, कांग, चिणा, माल / बावटा आदि स्थानीय बाज़ार में नहीं बिकते है जिससे लोग इसे लगाना नही चाहते है, परन्तु स्थानीय बाजार में इन फसलों के बीज और फसलों की अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है साथ ही इसकी सफाई, कटाई व अन्य कार्य करने हेतु यंत्र उपलब्ध नहीं है सारा का सारा कार्य परम्परागत तरीकों से किया जा रहा है जिससे लोग यह फसले लगाने में संकोच करते है |

किसान भाई अपने घर परिवार के पोषण हेतु और इसे खुद के लिए खाने जितना जरूर करें साथ ही आगे से हम इस बीज को संभाल कर रखेंगे | गांव में रहने वाले परिवार और अपने पोषण के लिए बहार से या बाज़ार पर निर्भर न हो और स्वयं भी अपने खेतों और खलियानों से पोषण प्राप्त करें और अपने बच्चे और परिवार का ख्याल रख कर खेती में और पोषण में अपनी भूमिका निभा सकता है

समुदाय की भूमिका – माल / बावटा ,सावा, कुरी, कांग, चिणा आदि परम्परागत खेती के लिए यदि हम सब मिल कर आवाज बुलंद करेंगे तो हमें बाज़ार भी मिलेगा और फिर से हमारा स्वराज होगा समुदाय को पहल करनी होगी जो कि हमारे गांव में हलमा जैसी सामाजिक परम्परा को जीवित रख सके | हम एकता का परिणाम देते है और अपने भाईचारे और आपसी व्यवहार के साथ-साथ बचत भी करते है उसी प्रकार हमें एक जुट होकर कार्य करना होगा |

इसमें सरकार की भूमिका भी अहम है क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था किसान के हाथों में तो सरकार को खाद्य निर्भरता कम करने हेतु देशी बीजों की तरफ रुख करना होगा |

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई- माही

प्रिय समुदाय साथियो हर वर्ष कि भांति इस वर्ष भी हम स्वराज समागम का आयोजन बड़े स्तर पर करने जा रहे है यह निरंतर आपके ही अथक प्रयासो से पिछले एक दशक से सफल रहा है | इसमें हम मुख्य तौर पर देखे तो वाग्धारा की जो एक सोच है वह कही ना कही हमारी जड़ो से जुडी हुई है इसमें आज के बाजारीकरण में किस प्रकार से हमारा समुदाय जकड़ता जा रहा है जबकि इसके विपरीत हमारे पूर्वज किस प्रकार से अपनी परम्पराओ से स्वराजी थे और इन्होने कितने दशको से अपनी परम्पराओ को जीवित रखा | हमारे कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई –माही में

जल स्वराज कि बात की जाए तो एक समय गाँवो में वर्षा जल संरक्षण हमारी ताकत हुआ करती थी एक समय में हम हमारे क्षेत्रो में तीनो फसले अच्छे से लिया करते थे जिसमे हमें वर्ष भर कभी पानी की कमी नहीं लगती थी परन्तु आज कि स्थितियों पर बात करे तो बहुत से गाँवो में पशुओ को गर्मी में पानी तक उपलब्ध नहीं होता इसका जिम्मेदार कौन? हम सोचे विचार करें तो निश्चिंत ही आप और मै ही होंगे क्योंकी वह व्यवस्थाए हमने बनाए नहीं रखी परन्तु हम चाहे तो उन्हें पुनःजीवित कर सकते है जिसमे हमें एक साथ हमारे खेतो पर मेडबंदी,जलस्त्रोतो का नियमित रख रखाव एवं हमारे आस-पास में बंजर भूमि पर पेड़-पोधे लगा कर इसको सही किया जा सकता है साथ में ही हमे महात्मा गाँधी नरेगा से भी हमारे जलस्त्रोतो को गहरीकरण के लिए प्रस्ताव रख सकते है |

वन स्वराज – एक ऐसा विषय जिसपे हमारा ध्यान नहीं जाता क्योकि आज के परिपेक्ष में बच्चो के लिए पपीता भी हमको बाजार से लेना पड़ता है ऐसा क्यों? हमारी विरासत में मिले जंगल और एक परिवार में 08 से 10 प्रकार के फल देने वाले पेड़ो पर ध्यान देना छोड़ दिया है, परन्तु में जब भी हमारे कार्यक्षेत्र में निकलता हूं तो गाँव में कुछ परिवारों के यहाँ पर ये सब मिलता है जब उनसे बाते होती है तो पता चलता है की वह परिवार सक्षम समूह के साथ विगत 04 से 05 वर्षो से जुड़ा हुआ है और नियमित रूप से अपनी पारंपरिक विषयो पर प्रगतिशील है साथ ही उसी क्षेत्र के 02 से 03 परिवार और अगर पुरे गाँव की बात की जाए तो थोड़ा मुश्किल लगता है ऐसा क्यों कभी सोचा आपने शायद अभी नहीं तो मेरा आपसे यही अनुरोध रहेगा जब भी आप यह पत्रिका पढ़ रहे हो, तो आपके घर के आस-पास कम से कम 05 से 07 प्रकार के पौधे इसी माह में लगाए ताकि आने वाले समय में हमारे बच्चो के लिए फल बाजार से नहीं ले जाने पड़े| हम सार्वजनिक तौर पर बात करे तो गाँव में शामलात भूमि पर ग्राम स्तर पर कार्य कर इसे विकसित करना होगा और हमारे गाँवो को एक मॉडल के रूप में विश्व के सामने प्रस्तुत करना होगा |

मिट्टी स्वराज में आज की स्थितियों को देखा जाए तो बहुत गंभीर परिस्थितियाँ होती जा रही है जिसका सबसे बड़ा उदाहरण सरकार के द्वारा जब रासायनिक खाद वितरण किया जाता है तो पुलिस प्रशासन को उसकी निगरानी के लिए वहा लगना होता है| हमारे समुदाय का यह समय आ गया है कि आज हमे मृदा के पोषण के लिए बाजार पर निर्भर होना पड रहा है| अगर ऐसा हुआ है तो समय गंभीर आने वाला है| हमको इसे देखना है तो अभी बरसात में हमारे खेत में देखे, अगर केचुए दिखते है तो हमारी भूमि अभी भी जीवित है परन्तु जिस खेत में केचुए दिखना बंद हुए है आप मान के चले की आने वाले समय में वहा उपज होना भी बंद होने वाली है| इन सबके लिए हम हमारे गाँव में सक्षम समूह की महिला परिवारों के यहाँ जाकर देखे कि किस प्रकार से मिश्रित खेती कर,पारंपरिक खाद,दवाई तैयार कर, मेड़ो पर मेडबंदी कर,भूमि समतलीकरण करके मृदा स्वास्थ्य को पुनः जीवित किया है साथियो आज भी समय है हम मिलकर देसी बीज, देसी खाद, देसी दवाई से मिट्टी को आने वाली पीढियों को अच्छे से सुप्रद कर सकते है जो आने वाले समय के किए सुखद होगा|

पशु स्वराज – पिछले वर्ष मुझे व्यक्तिगत रूप से स्वराज यात्रा में जाने का अवसर प्रदान हुआ था| हमने देखा की बाँसवाड़ा से जयपुर मार्ग के बीच में कुछ गाँव ऐसे आए थे जहाँ पर किसानो के पास खेती करने के लिए दो बैल नहीं थे | इनका उपयोग देखा जाए तो खेती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बैल कृषि कार्यो के लिए एवं कृषि औजार गाड़ियों को खींचने और ले जाने में मदद करते हैं। गोबर और गौमूत्र का उपयोग उर्वरक के रूप में किया जाता है, जो खेतों की खाद के रूप में आता है। इससे मिट्टी की फर्टिलिटी बढ़ती है और कृषि उत्पादन में सुधार होता है। बैल गौशाला में पाले जाते हैं, इससे भूमि प्रदूषण कम होता है। साथियो ये आपके साथ इसलिए संवाद में ला रहा हूं क्योंकि हमारे गाँवो में भी कही-कही ऐसी स्थितियां देखने को मिल रही है जो वाकई दुखद है |

बीज स्वराज कि बात करे तो बाजार पर निर्भरता को कम करने के लिए घर के बीज संरक्षण कर रखने तथा अधिक से अधिक फसलो का संकलन करना जारी रखा था| इस विषय पर आज हमारी सक्षम समूह की बहने और कुछ गाँव के समुदाय व परिवार इसको नियमित रखने में कामयाब हुए है| आप सभी से अनुरोध है की इस विषय पर सोचे जिसमे देसी बीजो का संकलन के तौर पर घर का बीज घर में, फले का बीज फले में, और गाँव का बीज गाँव में रखे ताकि एक समय बाद हमें बाजार पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा |

अंत में साथियो ग्राम विकास योजनाओ का क्रम महात्मा गाँधी (बापू) की जयंती 02 अक्तूबर से शुरू होगा जिसमे ग्राम चौपाल एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य ग्रामीण समुदाय के सभी सदस्यों को एक साथ आने का अवसर प्रदान करता है ताकि वे ग्राम विकास के प्लान को समझ सकें और अपनी राय दे सकें। इस प्रक्रिया के माध्यम से समुदाय के सदस्य स्वयं के विकास के लिए महत्वपूर्ण फैसलों का हिस्सा बन सकते हैं। चौपाल में समुदाय सदस्यों के साथ विकास के मुद्दों पर चर्चा करें जिसमे हमको पूर्व में हमारे ग्राम स्वराज समूहों की बैठकों में ग्राम विकास एवं व्यक्तिगत विकास के मुद्दों पर जनप्रतिनिधियों से बात कर ग्राम सभा में शामिल कराने होंगे और हां इस बार हमारे कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन योजना के प्रारंभ होने के बाद, उसके प्रदर्शन को मॉनिटर करेंगे और निगरानी रख कर वंचित समुदाय परिवारों को योजनाओं से जोड़ने का प्रयास करेंगे |

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई – मानगढ़

आप सभी को वाते पत्रिका के माध्यम से अलग –अलग विषयों पर स्वराज के सबंध में अवगत करवाया जाता रहा है| इस माह में हम वाते वाग्धारा नी पत्रिका के माध्यम से जानेगें कि हर वर्ष कि भांति ही इस वर्ष भी 20 से 22 सितम्बर 23 तक स्वराज समागम का आयोजन त्रिपुरा सुंदरी में किया जा रहा है| समागम में हम सभी मिलकर हमारी परम्परागत परम्पराओं, सामुदायिक विकास में समुदाय कि भागीदारी, विचारो का आपसी सवांद कर सरकार से आग्रह करेंगे| इस माह में हम हमारी ग्राम पंचायत स्तर पर विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से व्यक्तिगत व सामुदायिक विकास के लिए स्थानीय स्तर पर ग्राम सभाओं के माध्यम से **ग्राम पंचायत विकास योजना निर्माण** में हम महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ ही सरकार के साथ मिलकर आपसी सामजस्य अपनाते हुए विकास कि मुख्यधारा से जुड़ने के लिए प्रयास करे| संस्था मुख्य रूप से प्रमुख विषयों यथा वन स्वराज, जल स्वराज, वैचारिक स्वराज, सांस्कृतिक स्वराज एवं वर्तमान समय में बदलते वातावरण जिसमे जलवायु परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करते हुए जनजातिय समुदाय को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रयासरत है ।

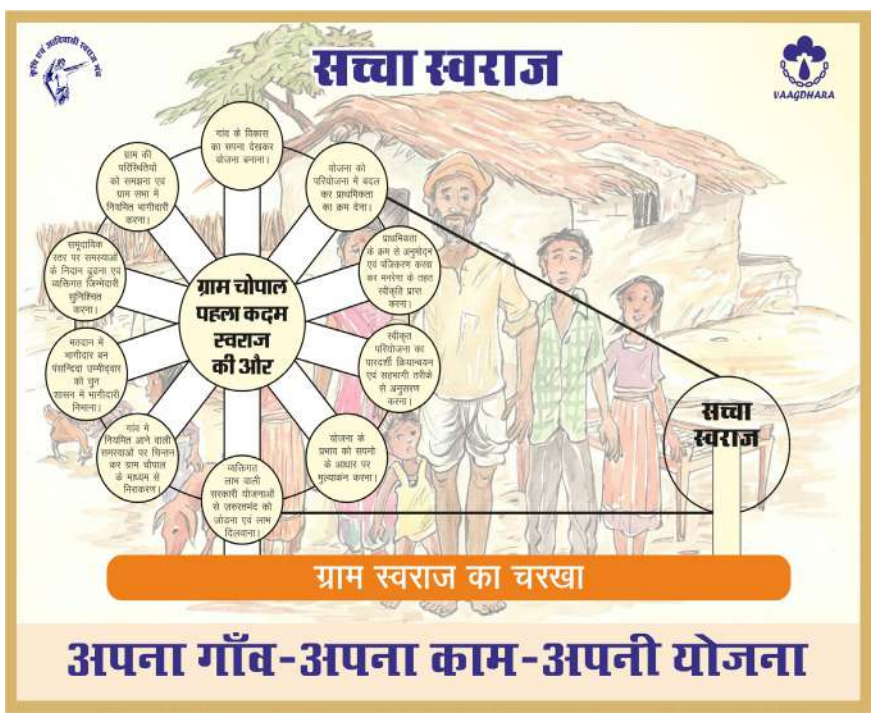

हम सभी को आगे आकर सामुदायिक विकास के लिए पहल करनी होंगी एवं इसी के साथ हमारी जिम्मेदारी भी है कि हम अपने गाँव के विकास कि कार्य योजना में भाग लेकर 11वीं अनुसूची के 29 विषयों पर योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए अगर ऐसा नही करते है तो हम अपने गाँव के साथ – साथ ही स्वयं के विकास में बाधा बन सकते है और हम समय पर ग्राम विकास में सामुदायिक भागीदारी से वंचित रह सकते है |

अगर स्वराज कि प्रक्रिया से हम सब वंचित रह जायेगे तो विकास कि मुख्यधारा से छुट जायेंगे |

स्थानीय उपाय : इस दौरान ग्राम स्वराज समूह, सक्षम समूह, कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन अपने अपने क्षेत्र में जन जागरूकता, सामुदायिक भागीदारी के साथ मिशन अंत्योदय, सर्वेक्षण, ग्रामीण सहभागी आंकलन का उपयोग करके साक्ष्य आधारित योजना के लिए GPDP योजना तैयार करने के लिए ग्राम सभा कि बैठकों में ज्यादा से ज्यादा भाग लेवे और निधारित चरणों को अपनाते हुए कार्य योजना में भागीदारी बढ़ाने के लिए आगे आये |

परिवार कि भूमिका : केंद्र व राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से कोई वंचित न रहे इसके लिए हम अपने- अपने परिवार के सदस्यों को वार्ड सभा, महिला सभा व बाल सभाओं का आयोजन होने पर उनमे भागीदारी सुनिश्चित करना हमारे परिवार कि जिम्मेदारी है |

• **समुदाय कि भूमिका** : ग्राम पंचायत विकास योजना निर्माण हेतु इसका प्रचार-प्रसार कर जन जागरूकता करना अति-आवश्यक है। जिससे समस्त लोगो की इसमें सहभागिता हो सके। योजना दिवस पर घर –घर दीवार लेखन, गीत, रात्रि चौपाल,रेडियो पर कार्यक्रम, नुक्कड़ नाटक के माध्यम से यह जागरूकता बढ़ाई जा सकती है इसे और सघन रूप से करने के लिए कई विधियां अपनाई जा सकती हैं। स्पष्ट उद्देश्य सांझा करना कि हम सभी लोग किस लिए साथ बैठे है ? समझ विकसित करना कि गांव की बेहतरी एवं दूरगामी परिवर्तन के लिए चर्चा करेंगे । सभी लोगों की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। शुरुआत में ही स्पष्ट करें कि यह बैठक किसी समस्या निवारण के लिए आयोजित नहीं की गई है बल्कि संपूर्ण गांव के लिए सपना (विजन) संकल्प तैयार करने के लिए एकत्रित हुए हैं।

• **सरकार कि भूमिका** : गरीबी मुक्त और आजीविका युक्त गाँव, स्वस्थ गाँव, बाल हितेशी गाँव , पर्याप्त जल युक्त गाँव , स्वच्छ एवं हरित गाँव , आत्मनिर्भर बुनियादी ढांचे वाला गाँव, सामाजिक रूप से न्याय संगत एवं सुरक्षित गाँव , सुशासन वाला गाँव, महिला हितेशी गाँव बनाने के लिए विस्तृत ग्राम सभा सभी ग्रामों से निकलकर आई विकास की आवश्यकताओं तथा मुद्दों पर चर्चा । क्षेत्रीय विभागीय अधिकारियों द्वारा निर्धारित प्रपत्र में विभागीय गतिविधियों पर संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण , विभागीय अधिकारियों द्वारा ग्राम सभा को वर्तमान में चल रही गतिविधियों तथा वित्तीय आवंटन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी तथा ग्राम पंचायत में अगले वित्तीय वर्ष में होने वाली गतिविधियों तथा वित्तीय आवंटन की जानकारी दी जाए । महिला समूहों (ग्राम स्वराज संगठन / महिला समूह) द्वारा गरीबी उन्मूलन योजना का प्रस्तुतीकरण नियोजन सहयोग दल के माध्यम से करवाया जाए । योजना निर्माण करते समय गरीबों, वंचितों और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों का विशेष ध्यान रखा जाए। जनजाति क्षेत्रों में किये जाने वाले कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर किया जाए ।

सच्चा स्वराज – सौर ऊर्जा पम्प परियोजना

विवरण : धरती पर पड़ने वाली सूरज की रौशनी और उसमे मौजूद गर्मी ही सौर ऊर्जा कहलाती है। धरती पर सौर ऊर्जा ही एकमात्र ऐसा ऊर्जा स्रोत है जो अन्य ऊर्जा स्रोतों की तुलना में अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध है। सूर्य से पृथ्वी पर अधिक मात्रा में ऊर्जा पहुँचती है तथा पृथ्वी पर इसका इस्तेमाल विद्युत् उत्पन्न करने में भी किया जाता है। विज्ञान एवं तकनीक में होने वाले विकास की मदद से मनुष्य ने ऐसी तकनीक ईजाद कर ली है जिससे धरती पर पड़ने वाली सूरज की किरणों को विज्ञान एवं तकनीक की मदद से विद्युत् में परिवर्तित किया जाता है। हर साल सूर्य से पृथ्वी पर पहुंचने वाली ऊर्जा की मात्रा धरती पर पाए जाने वाले समस्त कोयले, तेल, गैस आदि की मात्रा से 130 गुना अधिक है। पृथ्वी पर पड़ने वाली यह सूरज की किरणें बहुत सालों से यहाँ उपलब्ध हैं तथा वैज्ञानिकों का मानना है कि अगले 500-600 करोड़ सालों तक सूरज की किरणें धरती पर उपलब्ध रहेंगी तथा इसी प्रकार हम सौर ऊर्जा से विद्युत् उत्पन्न कर अपनी जरूरतों को पूरा कर सकेंगे। सौर ऊर्जा वह ऊर्जा है जो सीधे सूर्य से प्राप्त की जाती है। वैसे तो सौर ऊर्जा का इस्तेमाल पेड़-पौधों, जीव जंतुओं एवं जलवायु द्वारा विभिन्न स्तर पर किया जाता है लेकिन आजकल सौर ऊर्जा से विद्युत् उत्पन्न करने का भी प्रचलन बढ़ गया है। सौर ऊर्जा से विद्युत् उत्पन्न करने के लिए सोलर पैनल का इस्तेमाल किया जाता है। पैनल वो उपकरण होता है जिसकी मदद से सूरज की किरणों को विद्युत् में परिवर्तित किया जाता है। सूर्य से निकलने वाली किरणों में जो कण पाए जाते हैं उन्हें फ़ोटॉन कहा जाता है। इन फ़ोटॉन को सोलर पैनलों की मदद से ऊष्मा या विद्युत् में परिवर्तित करने के लिए ही सोलर पैनलों का इस्तेमाल किया जाता है। सोलर पैनलों में फोटोवोल्टिक सेल लगे होते हैं जो सिलिकॉन से बने होते हैं। जब सूर्य की रौशनी इन सेल पर पड़ती है तो फ़ोटॉन की ऊर्जा अवशोषित हो जाती है और ऊपरी परत में पाए जाने वाले इलेक्ट्रॉन सक्रिय हो जाते हैं। धीरे धीरे यह ऊर्जा पूरे पैनल में प्रवाहित होती है और इस प्रकार विद्युत् का उत्पादन होता है।

राज्य मे सौर ऊर्जा की अपार सम्भावना को ध्यान में रखते हुये उद्यान विभाग द्वारा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE), भारत सरकार की ''प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (PM KUSUM)'' परियोजना 2019-20 के कम्पोनेंट 'बी' अन्तर्गत कृषकों को हाईटेक उद्यानिकी/कृषि कार्य के लिए सिंचाई हेतु 7.5 एचपी पम्प क्षमता तक स्टैण्ड सौर ऊर्जा पम्प संयंत्र 60% अनुदान पर उपलब्ध कराये जायेगे। कृषक यदि 10 एचपी क्षमता का पम्पस लगाने के लिये इच्छुक है तथा इसके लिये पात्र होते है तो उन्हें 10 एचपी क्षमता का पम्पर लगाने पर 7.5 एचपी क्षमता तक ही अनुदान देय होगा। यह परियोजना जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय सौर मिशन (JLNNSM) तथा राज्य योजना के तहत् क्रियान्वित की जावेगी। इस योजना में केंद्र तथा राज्य की हिस्सा राशि 50-50 प्रतिशत है।

योजना का उदेश्य : जिन कृषकों के पास सिंचाई हेतु कृषि विद्युत कनेक्शन नही है एवं सिंचाई के लिये डीजल चलित संयंत्र अथवा अन्य वैकल्पिक साधन पर निर्भर है, उन्हें सिंचाई हेतु सौर ऊर्जा पम्प संयंत्र अनुदान पर उपलब्ध करवाये जायेगें।

पीएम कुसुम (प्रधान मंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान अभियान) योजना को भारत सरकार द्वारा 2019 में प्रारम्भ किया गया था। भारत सरकार की कुसुम योजना सभी भारतीय किसानों को सिंचाई के लिए डीजल या बिजली के पंपों को सौर ऊर्जा पंपों में बदलने के लिए 90% तक सब्सिडी प्रदान करती है।

राजस्थान कुसुम योजना के 3 बेनिफिट कम्पोनेट है जिसके अनुसार एक किसान को तीन प्रकार के लाभ योजना के अंतर्गत प्रदान किया जाता है।

- किसान अपनी जमीन किसी सौर ऊर्जा उत्पादक को प्रदान कर भूमि लीज के पैसे कमा सकता है।
- इसके अन्तर्गत डीज़ल पम्प को सोलर पम्प में बदलने पर सब्सिडी प्राप्त होगी।
- सौर ऊर्जा का उपयोग बिजली का उत्पादन कर बिजली विभाग को बेच कर अतिरिक्त लाभ प्राप्त कर सकते है।

कुओं का विद्युतीकरण एवं विद्युत पंपसेट वितरण योजना

सौर ऊर्जा संचालित पंपों के लिए पीएम कुसुम योजना बी के तहत आदिवासी किसानों को सहायता और बिजली शक्ति आपूर्ति और कृषि विद्युत कनेक्शन के लिए सहायता प्रदान करना। पीएम-कुसुम योजना के तहत उद्यान विभाग व निर्माता फर्मो के बीच एक साल बाद सहमति बनने पर प्रदेश के किसानों के लिए सोलर पम्प लगवाने की राह खुल चुकी है। इसके लिए राज्य सरकार ने 18 सोलर पम्प निर्माता फर्म के साथ लागत तय कर टेण्डर प्रक्रिया पुरी कर ली है। पीएम-कुसुम योजना के दूसरे फेज के तहत् प्रदेश में एक लाख किसानों को सोलर पम्प का लक्ष्य आवंटित किया गया है। योजना के तहत् सिंचाई के लिये सोलर पम्प लगाने पर किसानों को 60 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है। साथ ही अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति श्रेणी के किसानों को 60 प्रतिशत अनुदान के साथ राज्य सरकार की तरफ से 45 हजार रुपए की अतिरिक्त सहायता राशि दी जाती है। योजनान्तर्गत जनजाति कृषको को सौर उर्जा पम्प संयंत्र स्थापना हेतु टीएडी विभाग द्वारा 45,000 रू. देय होगी । 3 हॉर्स पावर सौर उर्जा पम्प संयंत्र स्थापना की अनुमानित औसत लागत 1.60 लाख है । जिसका 60 प्रतिशत अनुदान अनुमानित औसत राशि 0.96 लाख कृषि विभाग द्वारा देय होगी। 40 प्रतिशत 0.64 लाख में से राशि. 45,000रू. टीएडी विभाग द्वारा देय होगी। 0.19 लाख कृषक द्वारा देय होगी।

कुओं का विद्युतीकरण एवं विद्युत पंपसेट वितरण योजना जनजाति उपयोजना अनुसूचित क्षेत्र एवं गैर अनुसूचित क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के बी.पी.एल. कृषको के सिंचाई साधनो में सुधार करने हेतु उनके निजी कृषि कूप पर विद्युत कनेक्शन उपलब्ध कराने तथा सिंचाई हेतु विद्युत पंपसेट उपलब्ध कराया जाता है। इस हेतु कृषक की स्वयं की कृषि भूमि होना अनिवार्य है। कृषक द्वारा उसकी भूमि पर विगत कम से कम तीन वर्षो से खेती की जा रही हो। कुंए,जल स्त्रोत पर विद्युत कनेक्शन चाहे जाने पर सम्बन्धित विद्युत वितरण निगम लि. का जारी डिमान्ड नोट की प्रति आवेदन पत्र के साथ आवश्यक है। विद्युत कनेक्शन हेतु अधिकतम 10000 एवं विद्युत पंप हेतु अधिकतम 15000 की राशि योजनान्तर्गत उपलब्ध कराई जाती है।

किसान के लिए पात्रता

1. कृषक द्वारा कृषि एवं उद्यानिकी फसलो मे सिचाई हेतु ड्रिप, मिनी स्प्रिंकलर, माइक्रो स्प्रिंकलर, स्प्रिंकलर संयंत्र आवश्यक रूप से काम मे लिया जावें।
2. उच्च उद्यानिकी तकनीक यथा ग्रीन हाउस, शेडनेट हॉउस, आदि लेने वाले कृषक भी पात्र होगे।
3. योजना में डार्क जोन या ब्लैक जोन क्षेत्र मे पूर्व मे स्थापित डीजल पम्प सैट से सिंचाई करने वाले कृषकों को भी लाभान्वित किया जा सकेगा।
4. विद्युत कनेक्शन विहिन कृषक द्वारा उसके भू.स्वामित्व मे सिचाई हेतु जल संग्रहण ढांचा, डिग्गी, फार्म पौण्ड व जलहौज (निर्धारित क्षमता का) निर्मित हो तो, उसका कृषक से शपथ पत्र प्राप्त करने पर योजना हेतु पात्र माना जावेगा।
5. योजना मे यथा सम्भव लघु एवं सीमान्त कृषकों को प्राथमिकता दी जावें।
6. जिन कृषकों के पास कृषि विद्युत कनेक्शन है या सौर ऊर्जा पम्प संयंत्र परियोजना अन्तर्गत अनुदान प्राप्त कर लिया है। ऐसे कृषक इस योजनान्तर्गत पात्र नही होगे।
7. विद्युत विभाग मे कृषक द्वारा कृषि विद्युत कनेक्शन आवेदन होने की स्थिति मे, आवेदित कृषक द्वारा स्वयं की सहमति से विद्युत कनेक्शन आवेदन को समर्पित करने पर, योजना मे पात्र माना जावेगा।

समुदाय कि भूमिका : स्वराज संगठन, ग्राम स्वराज समूह, सक्षम समूह एवं समस्त समुदाय अपने स्तर पर ज्यादा से ज्यादा इस योजना के बारे में जन जागरूकता कर पात्र परिवारों को लाभांवित करावे |

आवेदन

परियोजना में ऑनलाइन आवेदन राज किसान साथी पोर्टल के माध्यम से किया जाता है ऑनलाइन आवेदन की वरीयता के आधार पर कृषक का चयन किया जाता है |

सौर ऊर्जा पम्प परियोजना के लिए आवेदन हेतु किसान के पास निम्नलिखित दस्तावेज होने आवश्यक है :-

- **आधार कार्ड की प्रति** |
- **सिंचाई स्त्रोत प्रमाण पत्र के साथ जमाबंदी** |
- **जन-आधार/भामाशाह कार्ड की प्रति** |
- **सिंचाई के स्त्रोत के लिए स्वघोषित प्रमाण पत्र** |

वाहन चलाते समय हेलमेट का उपयोग करे साथ ही गाड़ी कि स्पीड कम रखे... क्योकि परिवार आपकी प्रतिक्षा कर रहा है |

स्वास्थ्य व पोषण : डेंगू बुखार से बचाव है जरुरी

डेंगू बुखार एक कष्टदायक, शरीर को दुर्बल करने वाला मच्छर जनित रोग है इसका संक्रमण मुख्य रूप से वायरस से संक्रमित एडीज एजिप्टी मच्छर के काटने से फैलता है। मच्छर के काटने पर वायरस शरीर में प्रवेश करता है और फैलने लगता है। डेंगू बुखार श्वेत रक्त कोशिका (WBC) और प्लेटलेट्स के उत्पादन को प्रभावित करता है प्लेटलेट्स में गिरावट "थ्रोम्बोसाइटोपेनिया" नामक स्थिति के कारण होती है, हालांकि डेंगू वायरस प्लेटलेट्स को नष्ट नहीं करता है, लेकिन यह प्लेटलेट काउंट और फंक्शन को खराब करने वाली जटिलताओं को प्रभावित कर सकता है। कई स्थितियों में प्लेटलेट हानि दर्ज की जा सकती है। एक स्वस्थ व्यक्ति के 1,50,000 - 4,50,000 प्लेटलेट्स/यूएल होने का अनुमान है। डेंगू वायरस से संक्रमित होने पर, प्लेटलेट्स की संख्या न्यूनतम स्तर तक पहुंच सकती है, 40,000 प्लेटलेट्स/ यूएल से कम हो सकती है।

बच्चों को डेंगू होने की आशंका अधिक होती है। परिणामस्वरूप उन्हें इससे बचाने के लिए जरूरी कदम उठाना अनिवार्य हो जाता है। यह जानने के लिए आगे पढ़ें कि आप यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि आपके बच्चे इस घातक बुखार के हमले से सुरक्षित रहें।

डेंगू बच्चे को कैसे प्रभावित कर सकता है? -

बच्चे अपनी विकासशील प्रतिरक्षा प्रणाली के कारण बीमारियों का ज्यादा शिकार होते हैं। जब वे बाहर खेल रहे होते हैं तो तमाम तरह के कीटाणुओं और वायरस के सम्पर्क में आते हैं। सुबह और शाम के वक्त डेंगू के मच्छर सबसे अधिक सक्रिय होते हैं; उसी समय बच्चे घर से बाहर होते हैं, जिस कारण बच्चो को मच्छर के काटने की सम्भावना ज्यादा बढ़ जाती है और वे इससे संक्रमित हो जाते है I

डेंगू के लक्षण क्या हैं ? -

आमतौर पर बच्चों में डेंगू के लक्षण आसानी से दिखाई नहीं देते, क्योंकि वे सामान्य बुखार के जैसे ही होते हैं। वे बीमारी की गंभीरता पर भी निर्भर करते हैं। एडीज मच्छर द्वारा काटे जाने के 4 दिनों से लेकर 2 सप्ताह के बीच कभी भी लक्षण दिखाई दे सकते हैं। अचानक तेज बुखार व फ्लू जैसे लक्षण, जो 2 से 7 दिनों तक रह सकते हैं I

1. सिरदर्द
2. मन का मिचलाना
3. उल्टी आना
4. मांसपेशियों में दर्द,हड्डियों और जोड़ों में दर्द
5. आँखों के पीछे दर्द
6. मांसपेशियों में सूजन
7. त्वचा पर लाल चकत्ते

यदि बच्चो को या आपको ऐसे कोई लक्षण दिखाई दे है, तो डॉक्टर से तुरंत परामर्श करे ।

डेंगू होने पर बच्चों में बहुत कम लक्षण दिखते हैं और कई मामलों में तो बिल्कुल ही नहीं दिखते हैं। डेंगू के लक्षण बड़ी आसानी से मलेरिया और टाइफाइड बुखार के लक्षणों के जैसे दिख सकते हैं और भ्रमित कर सकते हैं। लंबे समय तक बुखार या शरीर में दर्द डेंगू के प्रमुख लक्षण हैं। बुखार की लगातार निगरानी और अलग-अलग लक्षणों के लिए सतर्क रहने से सही निदान हो सकता है। जीवनशैली संबंधी कुछ बदलाव करके और अतिरिक्त सावधानी बरतकर आप अपने बच्चों को डेंगू बुखार के चंगुल से बचा सकते हैं।

घरेलू उपचार

1- पपीता- पपीता का सेवन करने से प्लेटलेट्स तेजी से बढ़ती हैं। पपीता पाचन क्रिया को भी ठीक रखता है। पपीते की पत्तियों को कूट कर खा सकते हैं या फिर इनका जूस बनाकर पी सकते हैं।

2- नारियल पानी- डेंगू के बुखार में नारियल पानी बहुत फायदा करता है। नारियल पानी में काफी मिनरल्स मौजूद होते हैं। जो हमारे शरीर को मजबूत करता हैं। इसलिए डेंगू के बुखार में नारियल पानी अधिक से अधिक पीना चाहिए।

3- तुलसी- डेंगू के बुखार में तुलसी के पत्तों, काली मिर्च के साथ गर्म पानी में उबालकर पीना चाहिए। तुलसी के पत्तों में शरीर की रोग प्रतिरोधक बेहतर करने की क्षमता होती है। इसे दिन में कई बार पी सकते हैं।

डेंगू से बचाव कैसे करें? -

बच्चों को अपनी कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली के कारण डेंगू बुखार होने का खतरा अधिक होता है। यहां कुछ उपाय दिए जा रहे हैं, जो आपके बच्चे को डेंगू बुखार से सुरक्षित रख सकते हैं:

परिवार की भूमिका -

- **घर में स्वच्छता** : घर को साफ-सुथरा रखें और कहीं भी पानी जमा न होने दें। अगर कहीं पानी जमा होता है तो मच्छरों के प्रजनन को रोकने हेतू कीटनाशक दवाई तरल पदार्थों से इसे कीटाणु रहित करें, ताकि एडीज मच्छरों का प्रजनन स्थान न बन सके।
- **घर की अतिरिक्त सुरक्षा** : दरवाजे और खिड़कियों पर जालीदार जाली का प्रयोग करें और क्षतिग्रस्त दरवाजे-खिड़कियों की मरम्मत भी करवाएं। शाम के समय दरवाजे और खिड़कियां बंद रखें।
- **कपूर व नीम का तेल** : मच्छरों को भागने के लिए नीम के तेल व कपूर को मिला कर जलाये और कुछ समय के लिए कमरे का दरवाजा बंद कर देवे, इसकी तेज गंध से मच्छर तुरंत भाग जाते है ।
- **नीम के पत्ते की धुनी** : शाम के समय जब मच्छर ज्यादा होते है उस समय नीम के पत्तों का धुवाँ भी हम कर सकते है, ताकि घर के आस पास व बहार मच्छर न आये ।
- **मच्छर दानी का उपयोग** : सोते समय मच्छर दानी का उपयोग करे ताकि मच्छरों के काटने से बचा जा सके ।
- बच्चे जब भी घर से बाहर जाएं तो उन्हें लंबी आस्तीन वाली शर्ट और फुल पैंट पहनाकर ही बाहर भेजें। लंबे कपड़े मच्छरों के हमले के लिए त्वचा की उजागरता को कम करेंगे।
- बच्चों के लिए खेलने के समय को सीमित करें, विशेष रूप से शाम और सुबह के दौरान उन्हें बाहर भेजने से बचें, क्योंकि यही वह समय होता है, जब मच्छर सबसे अधिक सक्रिय होते हैं।

डेंगू को नियंत्रित करने के लिए रोकथाम ही आधारशिला है। प्राथमिक रोकथाम डेंगू के सामुदायिक प्रसार को कम करके, प्रजनन क्षेत्रों को खत्म करके, मादा मच्छर के अंतर लार चक्र को तोड़कर की जा सकती है, जिसमे प्रशासन व समुदाय की अहम् भूमिका होती है :-

स्थानीय प्रशासन की भूमिका -

- सार्वजनिक क्षेत्रों में उचित प्रबंधन और मच्छरों के प्रजनन स्थलों को साफ व स्वच्छ रखने मच्छर नियंत्रण उपायों को लागू करने के लिए स्थानीय प्रशासन व समुदाय की सामूहिक बैठक बुलाये व सम्बंधित विषय पर चर्चा कर एक कार्ययोजना का निर्माण करे ।
- संभावित मच्छरों के प्रजनन स्थलों को ख़त्म करने के लिए साफ सफाई करवाए व ऐसे सभी स्थानों पर मच्छर के प्रजनन को रोकने के लिए कीटनाशक दवाई का छिडकाव करवाए ।
- स्वास्थ्य समिति व कार्यकर्त्ता अपने-अपने क्षेत्र में भ्रमण कर परिवारों से संपर्क करे व डेंगू से बचाव सम्बंधित जानकारी साझा करे ।
- स्वास्थ्य केन्द्रों पर उपचार में उपयोगी दवाइया व जाँच किट की उपलब्धता सुनिश्चित करे ।
- स्वास्थ्य केन्द्रों, आंगनवाडी केन्द्रों व विद्यालय में डेंगू से बचाव के लिए जानकारी देवे ।

स्थानीय समुदाय की भूमिका -

- समुदाय स्थानीय स्तर पर आयोजित होने वाली बैठको में समुदाय के सदस्यों में डेंगू की रोकथाम के बारे में जागरूकता बढ़ाएँ ।
- सार्वजनिक क्षेत्रों में उचित प्रबंधन और मच्छरों के प्रजनन स्थलों को साफ व स्वच्छ रखने के लिए समुदाय को प्रोत्साहित करें।
- मच्छर नियंत्रण उपायों को लागू करने में पंचायत में व स्थानीय प्रशासन के अधिकारियों से बात करे व अधिकारियों का मच्छर नियंत्रण उपायों को लागू करने सहयोग करें।
- संभावित प्रजनन स्थलों को ख़त्म करने के लिए सामुदायिक सफ़ाई अभियान में शामिल हों।
- स्थानीय स्वास्थ्य समिति के सदस्यों व कार्यकर्ताओं से चर्चा कर उनके ढाणी के समुदाय को इससे बचाव की जानकारी साझा करने हेतु प्रेरित करे ।

डेंगू के लक्षण को 7 तरीके से पहचानें

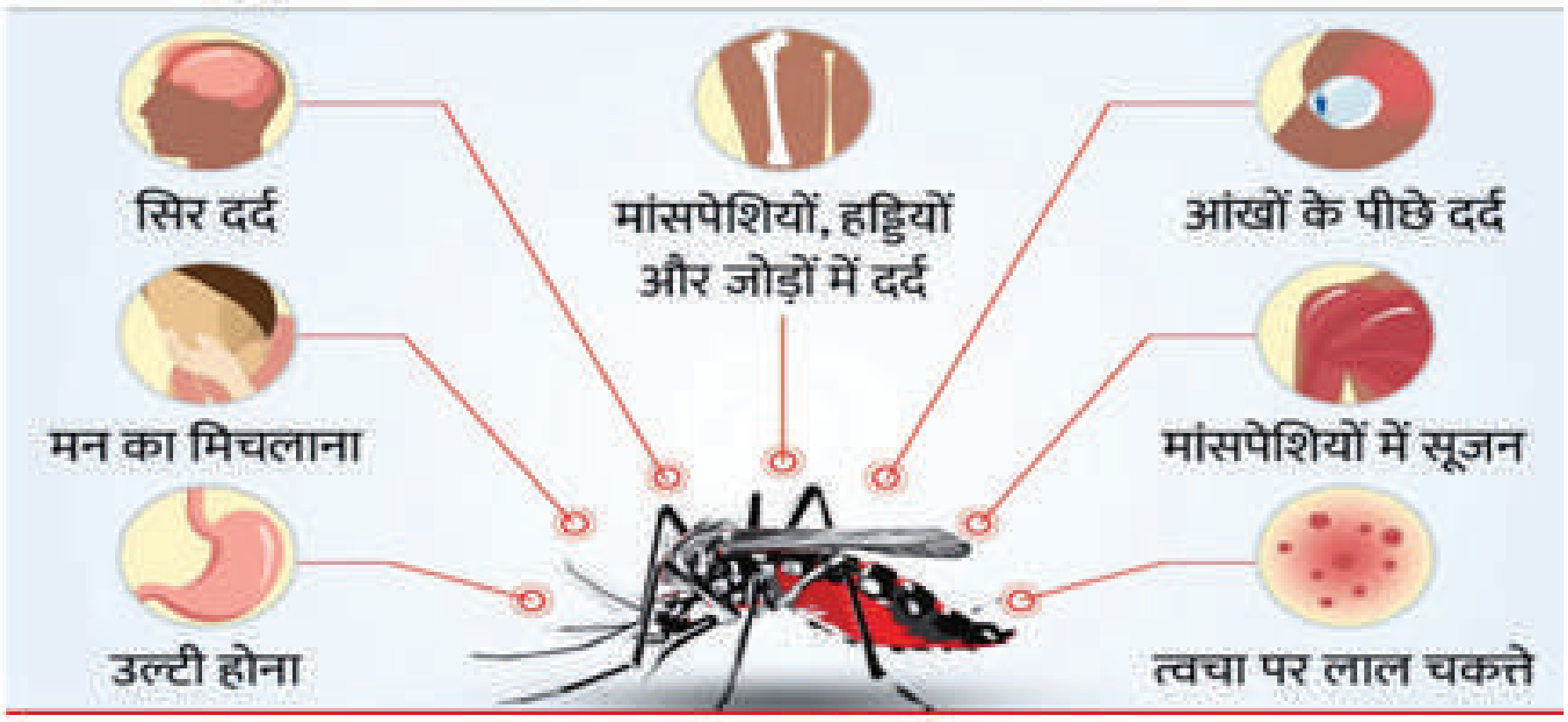

वागड़ रेडियो 90.8 FM
वागधारा, कुपड़ा
SCAN ME
अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
वागड रेडियों 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी -radio@vaagdhara.org
यह "वातें वाग्धारा नी" केवल आंतरिक प्रसारण है ।

संकलन एवं सहयोग : जागृती भट्ट, बाबुलाल चौधरी ।